بسم الله الرحمن الرحيم

لا إله إلا الله محمد رسول الله

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[स०] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 25
Issue - 02

राह-ए-ईमान

फरवरी
2023 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

संपादक - मंडल
फज़ल नासिर

सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य

टाइटल डिज़ाइन
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.

कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

विषय सूचि

1. पवित्र क़ुरआन.......... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी.......... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ)..........4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 27.1.2023)..........8
7. हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के उपदेश..........12
8. हे वे लोगो जो मेरी जमाअत में हो..........23
9. बच्चों के लिए जनरल नालेज 28
10. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें..........32
11. बैअत के साथ अच्छे कर्म करना भी आवश्यक है..........32

☆ ☆ ☆

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

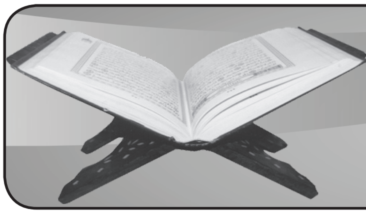

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

اَوَلَيْسَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؕ بَلٰى ۗ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿۸۲﴾
اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ۔ فَسُبْحٰنَ الَّذِىْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَىْءٍ وَّاِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ۔

अनुवाद:- क्या वह जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया, वह उनके जैसा बनाने पर समर्थ नहीं? क्यों नहीं, जबकि वह महान निर्माता (और) शाश्वत ज्ञान का स्वामी है। जब वह कुछ चाहता है तो उसका केवल इतना कहना पर्याप्त है कि हो जा तो वह तुरंत होना शुरू हो जाता है और होकर रहता है। बड़ा ही महिमावान है वह जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाहत है और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे। (यासीन - 82-84)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत इब्ने अब्बास वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने परवरदिगार की यह हमें बताई कि अल्लाह तआला ने नेकियाँ और बुराईयां दोनों लिख ली हैं और हर एक को स्पष्ट कर दिया है। इसलिए जो नेकी का इरादा करे लेकिन कर न सके तो उसे पूरी एक नेकी का सवाब मिलता है और अगर वह इरादे के बाद नेकी कर ले तो अल्लाह तआला दस से सात सौ गुना तक बल्कि इससे भी अधिक नेकियाँ उसके हिसाब में लिख देता है। और अगर कोई व्यक्ति बुराई का इरादा करे लेकिन उसके करने से रुका रहे तो अल्लाह तआला उसकी एक पूरी नेकी लिख देता है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति जानबूझ कर यह बुराई करे तो अल्लाह तआला तआला के यहाँ यह एक बुराई मानी जाती है। (मुस्लिम किताबुल ईमान)

अनुवाद: हज़रत अबु हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: अल्लाह तआला तुम्हारे शरीर को नहीं देखता और न तुम्हारे रूपों को (कि सुंदर हैं या बदसूरत) बल्कि वह तुम्हारे दिलों को देखता है (कि उनमें कितनी ईमानदारी और निष्ठा है।)

(मुस्लिम किताबुल ईमान)

☆ ☆ ☆

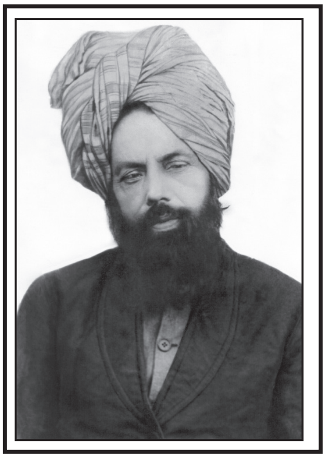

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

'नमाज़ में आनन्द की प्राप्ति की शर्तें :- एक ने कहा कि नमाज़ में कुछ आनंद नहीं आता, हज़रत अक्दस ने फ़रमाया :-

"नमाज़, नमाज़ भी हो। नमाज़ से पहले ईमान शर्त है एक हिन्दू यदि नमाज़ पढ़ेगा तो उसे क्या लाभ होगा जिस का ईमान दृढ़ होगा वह देखेगा कि नमाज़ में कैसा आनन्द आता है और इस से पहले पहचान है जो ख़ुदा के फ़ज़्ल से आती है और कुछ उसके स्वभाव से आती है जो अच्छे स्वभाव वाले उसकी कृपा प्राप्त करने के पात्र होते हैं और उसके योग्य होते हैं उन्हीं पर कृपा हुआ करती है हाँ यह भी अनिवार्य है कि जैसे दुनिया के मार्ग में प्रयास करता है वैसे ही ख़ुदा के मार्ग में भी करे। पंजाबी में एक उदाहरण है "जो मंगे सो मर रहे मरे सो मंगन जा।"

दुआ की वास्तविकता :-लोग कहते हैं कि दुआ करो। दुआ करना तो मरना होता है इस के यही अर्थ हैं कि जिस पर अत्यंत दर्जे की तड़प होती है वह दुआ करता है दुआ में एक प्रकार की मौत है और इस का बड़ा प्रभाव यही होता है कि मनुष्य एक प्रकार से मानो मर जाता है जैसे एक मनुष्य पानी की एक बूँद पी कर यदि दावा करे कि मेरी प्यास बुझ गई है या उसे बड़ी प्यास थी तो वह झूठा है हाँ यदि प्याला भर कर पीए तो इस बात का सत्यापन होगा। पूरी तड़प और विनम्रता के साथ जब एक रूप में दुआ की जाती है यहाँ तक कि रूह पिघल कर ख़ुदा के समक्ष गिर पड़ती है और इसी का नाम दुआ है। और अल्लाह की सुन्नत यही है कि जब ऐसी दुआ होती है तो ख़ुदा तआला या तो उसे स्वीकार करता है और या उत्तर देता है।

ख़ुदा का बात करना :- इस स्थान पर प्रश्नकर्ता ने कहा कि अल्लाह उत्तर कैसे देता है?
हज़रत अक्दस ने फ़रमाया :- बात करके बता देता है।

प्रश्नकर्ता ने कहा कि ख़ुदा कैसे बात करता है?

फ़रमाया कि :- ख़ुदा के फ़रिश्ते बात करते हैं। कई बार फ़रिश्तों ने हमारे साथ बात की है ख़ुदा से वार्तालाप में ऐसा अनुभव होता है कि अल्लाह तआला अपने बंदे की ज़बान पर कथन जारी कर रहा है और वह ऐसी शक्ति और तीव्रता से होता है जैसे एक फ़ौलादी कील धंसती जाती है ऐसा आनन्द होता है कि मानो ख़ुदा की वाणी है।

(मलफ़ूज़ात जिल्द- 4)

☆ ☆ ☆

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

"अत: इन आयतों में यह स्पष्ट संकेत है कि अज़ाब के निशान अवश्य उतरेंगे परन्तु और रंगों में। इसकी क्या आवश्यकता है कि वही निशान हज़रत मूसा के या हज़रत नूह और क़ौम-ए-लूत और आद और समूद के प्रकट किए जाएँ? अत: इन आयतों की व्याख्या दूसरी आयतों में अधिक की गई है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है – अर्थात् यह लोग समस्त निशानों को देखकर ईमान नहीं लाते। फिर जब तेरे पास आते हैं तो तुझ से लड़ते हैं और जब कोई निशान पाते हैं तो कहते हैं कि हम कभी नहीं मानेंगे। जब तक हमें स्वयं ही वह बातें प्राप्त न हों जो रसूलों को मिलती हैं। तू कह दे कि मैं पूर्ण सबूत लेकर अपने रब्ब की ओर से आया हूँ और तुम उस सबूत को देखते हो और झुठला रहे हो। जिस चीज़ को तुम शीघ्रता से मांगते हो (अर्थात् अज़ाब) वह तो मेरे अधिकार में नहीं। अन्तिम आदेश जारी करना तो ख़ुदा ही का पद वही सत्य को खोल देगा और वही खैरुलफ़ासिलीन है जो एक दिन मेरा और तुम्हारा फैसला कर देगा। ख़ुदा ने मेरी रिसालत पर तुम्हें रौशन निशान दिए हैं। तो जो उनको पहचान ले उसने अपने ही नफ़्स को लाभ पहुँचाया और जो अँधा हो जाए उसका बवाल भी उसी पर है मैं तो तुम पर निगरान नहीं। और तुझ से अज़ाब के लिए जल्दी करते हैं। कह वही प्रतिपालक इस बात पर समर्थ है कि ऊपर से या तुम्हारे पाँवों के नीचे से कोई अज़ाब तुम पर भेजे और चाहे तो तुम्हें दो सदस्य बना कर एक सदस्य की लड़ाई का दूसरे को स्वाद चखा दे और यह कि सब ख़ूबियाँ अल्लाह के लिए हैं। वह तुम्हें ऐसे निशान दिखायेगा जिन्हें तुम पहचान लोगे और कह तुम्हारे लिए ठीक-ठीक एक यौम की मीआद है★ न उसे तुम विलंब कर सकोगे और न जल्दी। और तुझ से पूछते हैं कि क्या यह सच बात है। कह हाँ मुझे क़सम है अपने रब्ब की कि यह सच है और तुम ख़ुदा तआला को उसके वादों से रोक नहीं सकते। हम शीघ्र ही उनको अपने निशान देखायेंगे। उनके देश के चारों ओर तथा स्वयं उनमें भी यहाँ तक की उन पर खुल जायेगा कि यह नबी सच्चा है। मनुष्य की प्रकृति में जल्दी है मैं शीघ्र ही तुम्हें अपने निशान दिखाऊंगा अत: तुम मुझसे जल्दी तो मत करो।

अब देखो कि इन आयतों में मांगे हुए निशान के दिखाने के बारे में कैसे साफ़ और पक्के वादे किए गए हैं यहाँ तक कि यह भी कहा गया कि ऐसे खुले-खुले निशान दिखाए जायेंगे कि तुम उनको पहचान लोगे और यदि कोई कहे कि यह तो हमने माना कि अज़ाब के निशानों के बारे में जगह-जगह पवित्र क़ुर्आन में वादे दिए गए हैं कि वे अवश्य किसी दिन दिखलाये जायेंगे और यह भी हमने स्वीकार

★हाशिया :- यौम से अभिप्राय यहाँ वर्ष है। अत: बाइबल में भी यह मुहावरा पाया जाता है तो पूरे वर्ष के बाद बद्र की लड़ाई का अज़ाब मक्का वालों पर उतरा जो पहली लड़ाई थी।

किया कि वे सब वादे इस युग में पूरे भी हो गए कि जब ख़ुदा तआला ने अपनी ख़ुदावंदी क़ुदरत दिखाकर मुसलमानों की कमज़ोरी और अशक्तता को दूर कर दिया और कुछ से हज़ारों तक उनकी नौबत पहुंचा दी और उनके द्वारा उन समस्त काफ़िरों को तहे तेग़ किया जो मक्का में अपनी उद्दंडता और अत्याचार के युग में अत्यन्त अहंकार से अज़ाब का निशान माँगा करते थे परन्तु इस बात का सबूत पवित्र क़ुर्आन में कहाँ मिलता है कि उन निशानों के अतिरिक्त और भी निशान सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दिखाए थे अत: स्पष्ट हो कि निशानों के दिखाने का वर्णन पवित्र क़ुर्आन में जगह-जगह आया है। कुछ जगहों पर आपने पहले निशानों का हवाला भी दिया है देखो आयत

كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ (अलअनआम - 111)

कुछ स्थानों पर कुफ़्फ़ार के अन्याय का वर्णन कर के उन का इस प्रकार इक़रार दर्ज किया है कि वे निशानों को देख कर कहते हैं कि वह जादू है देखो आयत -

وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ۝ (अलक़मर - 3)

कुछ स्थानों पर जो निशानों के देखने का मुनकिरों ने स्पष्ट इन्कार कर दिया है उनकी वे गवाहियाँ प्रस्तुत की हैं। जैसा की फ़रमाता है

وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ

(आले इमरान - 87)

अर्थात् उन्होंने रसूल के सच्चे होने पर गवाही दी और उन को खुले-खुले निशान पहुँच गए तथा कुछ स्थानों पर कुछ चमत्कारों को स्पष्टतापूर्वक वर्णन कर दिया है जैसे श़क्क़ुल क़मर का चमत्कार जो एक महान चमत्कार और ख़ुदा की क़ुदरत का पूर्ण नमूना है, जिसकी व्याख्या हमने पुस्तक "सुरमा चश्म आर्य" में भली-भांति कर दी है जो व्यक्ति विस्तृत देखना चाहे उसमें देख सकता है यहाँ यह भी याद रहे कि जो लोग आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से स्वयं बनाये हुए निशान माँगा करते थे अधिकतर वही आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निशानों के अन्तत: गवाह भी बन गए थे क्योंकि वही लोग तो थे जिन्होंने इस्लाम से सम्मानित होकर इस्लाम धर्म को पूरब और पश्चिम में फैलाया तथा चमत्कारों और भविष्यवाणियों के बारे में हदीस की पुस्तकों में अपने देखने की गवाहियाँ लिखवाईं फिर इस युग में एक विचित्र पद्धति है कि उन धार्मिक बुज़ुर्गों के उस असभ्यता के युग के इन्कारों को बार-बार प्रस्तुत करते हैं जिनसे अन्त में स्वयं पृथक और तौबा करने वाले हो गए थे परन्तु उनकी उन गवाहियों को नहीं मानते जो सदमार्ग पर आने पर उन्होंने प्रस्तुत की हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चमत्कार तो चारों ओर से चमक रहे हैं वे क्योंकर चुप रह सकते हैं केवल जो चमत्कार सहाबा की गवाहियों से सिद्ध हैं वे तीन हज़ार चमत्कार हैं और भविष्यवाणियाँ तो शायद दस हज़ार से भी अधिक होंगी जो अपने समयों पर पूरी हो गईं और होती जाती हैं।"

(एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब- 29-33)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय

आने वाली परीक्षाओं के लिए स्वयं को तैयार करें

शीघ्र ही देश भर में स्कूलों की परीक्षाएं होने वाली हैं। तो ऐसे में परीक्षा के लिए कुछ बातों का ध्यान अवश्य रखें। पहली बात तो यह कि चिंतित बिल्कुल न हों, अपने मन को शांत रखें, सारा ज़ोर अपनी पढ़ाई की ओर रखें। इसके लिए सबसे पहले टाइम टेबल के साथ पढ़ाई के समय का निर्धारण करें।

कई बच्चे बिना टाइम-टेबल के परीक्षा की तैयारी करते हैं तो कई टाइम-टेबल बनाकर। पर सभी बच्चों को हर विषय को पढ़ने के लिए एक टाइम-टेबल अवश्य बनाना चाहिए और उसे फॉलो करना चाहिए। इसके साथ ही समयानुसार उन्हें अंतराल भी लेना आवश्यक है। टाइम-टेबल बनाते हुए समय का निर्धारण भी ज़रूरी है ऐसा माना जाता है कि सुबह का समय पढ़ाई के लिए सबसे उपयुक्त समय होता है, इस समय पढ़ी गयी बातें लम्बे समय तक के लिए आपके दिमाग में बनी रहती हैं।

यह भी ध्यान रखें कि खुद को सेहतमंद रखें परीक्षा आते ही छात्र चिंता और तनाव से भर जाते हैं, जिसके कारण वो समय से खाना-पीना नहीं करते और अंततः बीमार पड़ जाते हैं। अतः आपको अपना ध्यान रखना चाहिए और हो सके तो समय निकाल कर थोड़ा व्यायाम अवश्य करें।

खुद को टी.वी. या सोशल मीडिया से दूर रखें

छात्रों को यह बात अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए की परीक्षा खत्म होने तक वो खुद को टी.वी. और सोशल मीडिया से दूर रखें, ताकि आपके दिमाग में फ़िज़ूल की बात न रहें। एक फ्रेश माइंड के साथ आपके द्वारा पढ़ी गई बातें आपको लम्बे समय तक याद रहती हैं। फिर यह भी याद रखें परीक्षा और पढ़ाई ज़िन्दगी का केवल एक हिस्सा है। परीक्षा महत्वपूर्ण अवश्य है पर आपकी जिंदगी से ज्यादा महत्त्व नहीं रखती। अपनी मेहनत और लगन से पढ़ाई करें, अवश्य सफल होंगे।

बचे हुए दिनों में हम परीक्षा की तैयारी कैसे करें?

बहुत से छात्रों की यह परेशानी होती है कि अभी तक उन्होंने कुछ नहीं पढ़ा है, तो अब क्या करें, पढ़ाई कैसे शुरू करें इत्यादि। छात्रों को इस बात से घबराने या परेशान होने की आवश्यकता नहीं है, वो बस अपने आपको शांत रखते हुए आज से ही मेहनत और खुद पर भरोसा करके पढ़ाई में लग जाएं। पढ़ाई के लिए जो जरूरी किताबें या नोट्स हैं सभी को इकठ्ठा करें। समय निर्धारण के साथ अपनी पढ़ाई शुरू करें। कोशिश करें कि अपनी क्लास या कोचिंग के नोट्स से पढ़ें ताकि आपका कोर्स जल्दी खतम हो और मन की शंका दूर रहे।

कुछ ऐसे भी छात्र होते है जो रोज़ाना नहीं पढ़ते हैं तो अब उन्हें रोज़ाना पढ़ना चाहिए। परीक्षा से पहले हर विषय को एक, दो या तीन दिन का समय देकर पूरा सिलेबस एक बार दोहरा लें। इससे आपके अंदर आत्मविश्वास पैदा होगा। और आप जानते हैं कि जीवन में किसी भी परीक्षा के लिए आत्मविश्वास बहुत ज़रूरी है। छात्रों को खुद को भरोसा दिलाना होगा कि वह अच्छा और बेहतर कर सकते हैं।

और सबसे ज़रूरी अल्लाह तआला से दुआ करें फिर मेहनत भी करें सफलता ज़रूर मिलेगी इन्शा अल्लाह।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना "शाने इस्लाम"

इस्लाम से न भागो राहे हुदा[हिदायत] यही है
ऐ सोने वालो ! जागो शम्शुज़[सूर्य] ज़ुहा यही है
मुझको क़सम ख़ुदा की जिस ने हमें बनाया
अब आसमाँ ने नीचे दीने[धर्म] ख़ुदा यही है
ए मेरे यारे जानी, कर खुद ही मेहरबानी
मत कह कि "लन तरानी"* तुझ से रज़ा[इच्छा] यही है
फ़ुर्कत[जुदाई] में क्या बनी है हर दम में जाँ कुनी[दम घुटना] है
आशिक़ जहाँ पे मरते वह करबला[8] यही है
तेरी वफ़ा है पूरी हम में है ऐब दूरी
ताअत[आज्ञापालन] भी है अधूरी हम पर बला यही है
तुझ में वफ़ा है प्यारे सच्चे हैं अहद सारे
हम जा पड़े किनारे, जाए बुका[9] यही है
हम ने न अहद पाला यारी में रख़ना[रुकावट] डाला
पर तू है फ़ज़्ल वाला, हम पर खुला यही है
ए मेरे दिल के दरमाँ[10] हिजराँ है तेरा सूज़ाँ[11]
कहते हैं जिस को दोज़ख़ वो जाँ-गुज़ा[12] यही है
इक दीं की आफ़तों का ग़म खा गया है मुझको
सीना पे दुश्मनों के पत्थर पड़ा यही है
क्यों कर तबाह वो होवे क्यों कर फ़ना वो होवे
ज़ालिम जो हक़ का दुश्मन वो सोचता यही है
ऐसा ज़माना आया जिस ने ग़ज़ब है ढ़ाया
जो पीसती है दीं को वो आसिया[13] यही है
शादाबी-व-लताफत इस दीं की क्या कहूँ मैं
सब ख़ुश्क़ हो गए हैं फूला फला यही है

(क़ादियान के आर्य और हम प्रकाशन 1907 ई. पृ. 48,
रूहानी ख़ज़ायन, भाग 20, पृ. 449)

.*तू मुझे नहीं देख सकता। 8. इराक का वह स्थान जहाँ हज़रत हुसैन[(र)] शहीद किए गए। 9. रोने का स्थान 10. इलाज। 11. जलाने वाला। 12. जान को घुटाने वाला। 13. चक्की।

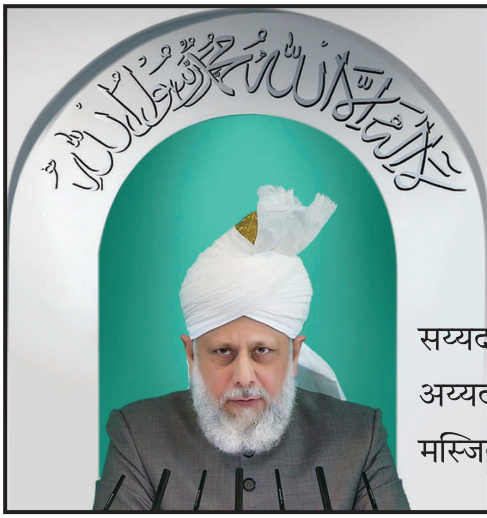

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 27.1.2023 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

निश्छलता एवं आज्ञाकारिता की मूरत
कुछ बदरी सहाबियों के पवित्र जीवन चरित्र का वर्णन

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:-

आज सहाबियों के वर्णन में से कुछ बयान करूँगा। पहला वर्णन हज़रत अबू लुबाबा इब्ने अब्दुल मुंज़िर रज़ी. का है, इनके बारे में कुछ अन्य रिवायतें मिली हैं। अल्लामा इब्ने अब्दुलबिर अपनी रचना अल-इस्तिआब में लिखते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ी. क़ुर्आन मजीद की आयत-

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا

अर्थात- और कुछ दूसरे हैं जिन्होंने अपने गुनाहों को स्वीकार किया, उन्होंने अपने शुभ कर्म तथा अशुभ कर्म मिला जुला दिए, के बारे में फ़रमाते हैं कि यह आयत अबू लुबाबा रज़ी. तथा उनके साथ सात आठ आदमियों के बारे में है जो तबूक के युद्ध में पीछे रह गए थे। बाद में उन्होंने ख़ुदा के हुज़ूर तौबा की और अपने आपको खम्बों के साथ बाँध लिया, उनका शुभ कर्म तौबा था तथा उनका अशुभ कर्म जिहाद से पीछे रहना था।

मजमा बिन जारियः से रिवायत है कि हज़रत अनीस बिन क़तादा रज़ी. की शहादत के बाद उनकी पतनी हज़रत ख़नसा सुपुत्री ख़दाम के पिता जी ने मज़ीना क़बीले के एक आदमी के साथ उनकी शादी कर दी जो उनको पसन्द नहीं था, जिस पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनका निकाह तोड़ दिया जिसके बाद हज़रत अबू लुबाबा रज़ी. ने उनके साथ शादी की, जिनसे हज़रत सायब बिन अबू लुबाबा रज़ी. पैदा हुए। अब्दुल्लाह बिन अबी ज़ैद कहते हैं कि हम हज़रत अबू लुबाबा रज़ी. के साथ उनके घर गए तो वहाँ एक व्यक्ति फटे पुराने कपड़ों में बैठा था जिसने कहा कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना कि जो व्यक्ति क़ुर्आन करीम को सुन्दर स्वर के साथ नहीं पढ़ता, वह हममें से नहीं है।

फिर वर्णन है अबुज़्ज़ियाह बिन साबित बिन नुअमान रज़ी. का, एक रिवायत के अनुसार उनको बदर के युद्ध में पिंडली में पत्थर की नोक से घाव लगने के बाद वापस लौटना पड़ा। जिस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके लिए बदर के युद्ध की सम्पदा में से उनका भी भाग रखा।

फिर हज़रत अनसा रज़ी. मौला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वर्णन है। इमाम ज़ोहरी बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़ोहर की नमाज़ के बाद मिलने वालों को भेंट की अनुमति दिया करते थे और यह अनुमति आप स. से हज़रत अनसा रज़ी. लिया करते थे।

फिर वर्णन है हज़रत मुरसद बिन अबी मुर्सद रज़ी. का। इमरान बिन मनाह कहते हैं कि जब अबू मुर्सद रज़ी. तथा उनके पुत्र मुर्सद बिन अबी मुर्सद रज़ी. ने मदीने की ओर हिजरत की तो उस समय आप दोनों हज़रत उम्मे कुलसूम बिन हदम रज़ी. की तरफ़ ठहरे। मुहम्मद बिन उमर कहते हैं कि आप रज़ी. ओहद की लड़ाई में भी सम्मिलित हुए। हज़रत अबू मुर्सद कन्नाज़ रज़ी. हज़रत अबू हमज़ा रज़ी. से आयु में बराबर तथा दोस्त थे। हज़रत अबू मुर्सद रज़ी. और उनके बेटे हज़रत मुर्सद दोनों को बदर के युद्ध में शामिल होने का सामर्थ्य मिला।

फिर वर्णन है हज़रत अबू मुर्सद रज़ी. कन्नाज़ बिन हसनैन अलग़नवी का। रबीउल अव्वल 2 हिजरी को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीस ऊँटों पर सवारों का एक दल अपने चचा हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब के नेतृत्व में मदीने से पूरब की ओर सैफ़ुल बहर की ओर रवाना फ़रमाया, जहाँ मक्का के मुख्या अबू जहल तथा उसके तीन सौ सवारों की सेना के साथ सामना हुआ। दोनों सेनाएँ लड़ाई के लिए पंक्तिबद्ध हो गईं कि उस क्षेत्र के मुख्या मजदी बिन उमरू अल-जहनी, महान प्रमुख मअदी बिन उमरू अल-जहूनी ने दोनों पक्षों में बीच बचाव करवा दिया और लड़ाई रुक गई। यह अभियान सिर्या हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब के नाम से विख्यात है। हज़रत अबू मुर्सद रज़ी. भी इस अभियान में शामिल थे। रिवायतों में प्रसिद्ध है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबसे पहला झंडा हज़रत हमज़ा रज़ी. को बाँध कर दिया था और इस अभियान में हज़रत हमज़ा रज़ी. का झंडा हज़रत अबू मुर्सद रज़ी. उठाए हुए थे।

फिर वर्णन है हज़रत सलीत बिन क़ैस बिन उमरू रज़ी. का, हज़रत सलीत बिन क़ैस बिन उमरू रज़ी. का सम्बंध अंसार के क़बीले ख़िज़रज की बनू अदी बिन नज्जार नामक शाखा से था। मक्का की विजय के अवसर पर तथा हुनैन के युद्ध के अवसर पर अंसार के क़बीले बनू माज़न का झंडा हज़रत सलीत बिन क़ैस रज़ी. के पास था। १३ हिजरी तथा कुछ कथनाकारों के अनुसार १४ हिजरी के आरम्भ में हज़रत उमर रज़ी. की ख़िलाफ़त के दौर में मुसलमानों तथा फ़ारसियों के बीच जसर नामक युद्ध की घटना घटी। इस युद्ध में दो हज़ार ईरानी सैनिक मारे गए जबकि कुछ कथनों के अनुसार छ: हज़ार ईरानी मारे गए। इसी प्रकार कुछ विद्वानों के अनुसार अट्ठारह सौ अथवा चार हज़ार मुसलमान शहीद हुए। इन शहीदों में हज़रत सलीत बिन क़ैस रज़ी. भी शामिल थे।

फिर वर्णन है हज़रत मजज़र बिन ज़ियाद रज़ी. का। हज़रत मजज़र बिन ज़ियाद रज़ी. ने इस्लाम से

पूर्व के ज़माने में सुवेद बिन सामित की हत्या कर दी थी। बाद में हज़रत मजज़र रज़ी. तथा हज़रत हारिस बिन सुवेद सामत रज़ी. ने इस्लाम क़बूल कर लिया परन्तु हज़रत हारिस बिन सुवेद रज़ी. अपने पिता की हत्या का बदला लेने की ताक में रहे। ओहद की लड़ाई में जब क़ुरैश ने मुड़ कर मुसलमानों पर हमला किया तो हारिस बिन सुवेद ने पीछे से हज़रत मजज़र रज़ी. की गर्दन पर वार करके उन्हें शहीद कर दिया। हज़रत जिब्रईल अलै. ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बताया कि हारिस बिन सुवेद ने धोखे से हज़रत मजज़र रज़ी. की हत्या कर दी है और आप स. को आदेश दिया कि आप स. हारिस को मजज़र रज़ी. के बदले में मार डालें। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश पर हज़रत अवीम बिन साअद: रज़ी. ने मस्जिद क़ुबा के द्वार पर हारिस बिन सुवेद की हत्या कर दी।

फिर रफ़ाअ: बिन राफ़े बिन मालिक बिन अजलान रज़ी. का वर्णन है। रफ़ाअ: बिन राफ़े बिन मालिक बिन अजलान रज़ी. अपने मौसेरे भाई मआज़ बिन अफ़रा रज़ी. के साथ मक्का पहुंचे तथा सनिया नामक पहाड़ी से नीचे उतरे तो एक व्यक्ति को देखा, वे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थे। हमने उन्हें नहीं पहचाना तथा उनसे पूछा कि नबुव्वत का दावेदार व्यक्ति कहाँ है? आप स. ने फ़रमाया कि वह मैं ही हूँ। हमारे कहने पर आप स. ने हमें इस्लाम के बारे में बताया। हज़रत रफ़ाअ: बैतुल्लाह की परिक्र मा के लिए चले गए और दुआ की, जिसके बाद उन्होंने कलमा पढ़ लिया और इस्लाम क़बूल कर लिया।

हज़रत रफ़ाअ: कहते हैं कि एक दिन हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मस्जिद में बैठे हुए थे कि एक बदवी आदमी ने नमाज़ पढ़कर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम किया। आप स. ने सलाम का जवाब दिया और फ़रमाया कि नमाज़ दोबारा पढ़ो। उसने नमाज़ पढ़ी और वापस आकर सलाम किया। आप स. ने उसे फिर दोबारा नमाज़ पढने का फ़रमाया, इसी प्रकार दो तीन बार हुआ। अंतत: उसने कहा कि मुझे नमाज़ सिखा दें। आप स. ने फ़रमाया कि जब तुम नमाज़ का इरादा करो तो पहले अल्लाह के आदेशानुसार वज़ू करो, फिर कुछ क़ुर्आन याद हो तो उसे पढ़ो, फिर संतोष के साथ रुकूअ करो और उसके बाद बिल्कुल सीधे खड़े हो जाओ, फिर ख़ूब संतुलन के साथ सजदा करो, फिर संतोष के साथ बैठो, फिर सजदा करो, फिर उठो। यदि तुमने ऐसा कर लिया तो तुम्हारी नमाज़ पूरी हो गई तथा यदि तुमने इसमें कुछ कमी की तो इतनी ही तुमने अपनी नमाज़ में कमी की।

फिर वर्णन है हज़रत उसैद बिन मालिक बिन रबीअ: रज़ी. का। इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि अबू सईद बिन मालिक बिन रबीअ: रज़ी. बदर की लड़ाई में शामिल थे। जब अन्तिम आयु में उनकी दृष्टि चली गई तो उन्होंने कहा कि यदि आज मैं बदर के मैदान में होता और मेरी नज़र भी ठीक होती तो मैं तुमको वह घाटी दिखा देता जहाँ से फ़रिशते निकले थे, मुझे इसमें तनिक भी शंका एवं भ्रम नहीं होगा। हज़रत अबू उसैद मालिक बिन रबीअ: रज़ी. कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठे हुए थे कि बनू सलमा का एक व्यक्ति आया और कहा कि क्या माँ-बाप के मरने के बाद भी उनके साथ सुन्दर व्यवहार की आवश्यकता है? आप स. ने फ़रमाया- हाँ, उनके लिए दुआ करना, इस्तिग़फ़ार करना, उनके वादों को पूरा करना, उनके रिश्तेदारों से सहानुभूति के साथ सुन्दर व्यवहार करना, उनके मित्रों का सम्मान

करना। इस प्रकार उनको भी सवाब पहुंचता रहेगा और उनकी मग़िफरत के सामान होते रहेंगे।

उसमान बिन अरक़म रज़ी. अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बदर के दिन फ़रमाया कि तुम्हारे पास जो युद्ध से हाथ आई सम्पत्ति है, उसे छोड़ दो तो हज़रत अबू उसैद अस्साअदी ने आयज़ अलमजऱ्बान की तलवार रख दी और हज़रत अरक़म रज़ी. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वह तलवार मांग ली जिस पर आप स. ने वह तलवार उन्हें प्रदान कर दी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल असद रज़ी. का वर्णन है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आप रज़ी. को पर्चम देकर बनू असद को पराजित करने के लिए डेढ़ सौ महाजिर और अन्सार के नेतृत्व में भेजा। आप रज़ी. ओहद तथा बदर के युद्धों में शामिल हुए। आप रज़ी. ओहद की लड़ाई में बाज़ू पर एक घाव लगने के कारण ३ जमादिल आख़िर 8 हिजरी को वफ़ात पा गए।

फिर वर्णन है हज़रत ख़लाद बिन राफ़े अज़्ज़ारकी रज़ी. का। हज़रत ख़लाद बिन राफ़े रज़ी. का सम्बंध अंसार के क़बीले बनू ख़िज़रज की अजलान नामक शाखा से था। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस व्यक्ति को दो तीन बार नमाज़ दोबारा पढने का निर्देश दिया था और फिर उसके कहने पर उसे नमाज़ का तरीक़ा सिखाया था, वे हज़रत ख़लाद बिन राफ़े रज़ी. ही थे।

फिर हज़रत अबाद बिन बशर रज़ी. का वर्णन है। खाईयों वाले युद्ध के अवसर पर उन्हें सम्पूर्ण सेवा करने का अवसर मिला। हज़रत अबाद बिन बशर रज़ी. ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश पर उस समय अबू सुफ़यान तथा उसके साथ कुछ मुशरिकों का सामना किया तथा उन्हें वापस जाने पर विवश कर दिया था। उस अवसर पर हज़रत अबाद बिन बशर रज़ी. ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ेमे की सुरक्षा करने की भी तौफ़ीक़ पाई। हज़रत उम्मे सलमा रज़ी. बयान करती थीं कि अल्लाह तआला अबाद बिन बशर रज़ी. पर दया करे, वह रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबियों में से सबसे बढ़ कर आप स. के ख़ेमे के साथ चिमटे रहे तथा निन्तर उसकी सुरक्षा करते रहे।
फिर वर्णन है हज़रत हातिब बिन अबी बलतआ रज़ी. का। उनका देहान्त 65 वर्ष की आयु में तीस हिजरी में मदीना में हुआ और हज़रत उसमान रज़ी. ने उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई। याक़ूब बिन उतबा कहते हैं कि हातिब बिन अबी बलतआ रज़ी. ने अपनी वफ़ात के दिन चार हज़ार दीनार और दर्हम छोड़े। एक बार आप रज़ी. का एक गुलाम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आप रज़ी. की शिकायत लेकर आया और कहा- हातिब अवश्य नर्क में दाख़िल होगा। आप स. ने फ़रमाया- तू ने झूठ बोला, वह कदापि उसमें दाख़िल नहीं होगा क्यूँकि वह बदर के युद्ध तथा हुदैबिय: की सन्धि में शामिल हुआ था।
हुज़ूर-ए-अनवर ने अन्त में फ़रमाया कि अभी और कुछ बदरी सहाबियों के वर्णन हैं जो इन्शाअल्लाह बाद में बयान कर दूँगा।

किसी जानकारी हेतु संपर्क करें टोल फ्री नम्बर अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान- 1800 103 2131

☆ ☆ ☆

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के पवित्र उपदेश

अनुवादकः इब्नुल मेहदी लईक एम ए

अल्लाह तआला की कृपा से हर साल कई भाई जमाअते अहमदिय्या में प्रवेश कर रहे हैं। लेकिन जो सत्य के विरोधी हैं वह गलत फेहमियां फैलाने और नई बैअत करने वालों को गुमराह करने और बहकाने का प्रयत्न करते रहते। इसलिये आवश्यक है कि जमाअत में नए शामिल होने वाले लोगों को हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के पवित्र उपदेश आपके अपने शब्दों में बार-बार बताए जाएं।

संस्थापक जमाअते अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह तरीका था कि जब नए लोग बैअत करके जमाअते अहमदिय्या में प्रवेश करते तो आप उन्हें बैअत की वास्तविकता और सही इस्लामी शिक्षाओं से परिचित कराते और आवश्यक उपदेश देते।
इस पम्फ़लेट में नमूने के तौर पर कुछ उपदेश प्रकाशित किए जा रहे हैं। आवश्यक है कि हर बैअत करने वाले तक इन पवित्र उपदेशों को पहुंचाया जाए, ताकि वह जमाअते अहमदिया में दाखिल होने के सही उद्देश्य से पूरे तौर पर परिचित होकर उनपर अमल करने की तौफ़ीक़ पाएँ

हैदराबाद से आकर नई बैअत करने वालों को नसीहतें

20 मई 1904 स्थान गुरदासपुर

असर की नमाज़ के पश्चात हैदराबाद (दक्षिण) के कुछ व्यक्तियों ने बैअत (दीक्षित) की। बैअत के पश्चात हुज़ूर ने भाषण देते हुए फ़र्माया।

"आपने जो मुझ से आज बैअत का सम्बन्ध बनाया है तो मैं चाहता हूँ कि कुछ शब्द उपदेश के तौर पर तुम्हें कहूं। यह याद रखना चाहिए कि मानव जीवन का कोई भरोसा नहीं। अगर कोई व्यक्ति ख़ुदा पर विश्वास रखे और फिर क़ुर्आन करीम पर गौर करे कि ख़ुदा तआला ने क़ुर्आन करीम में क्या कुछ फ़र्माया है तो वह व्यक्ति दीवाना वार संसार को त्याग कर ख़ुदा हो जाए। यह पूर्णतया सत्य कहा गया है कि दुनिया रोज़े चन्द आक़बत ब ख़ुदावन्द। अब ख़ुदा तआला की वाणी से स्पष्ट होता है कि जो मनुष्य ख़ुदा तआला की ओर आना चाहता है और वास्तविक तौर पर उसका दिल ऐसा नहीं कि उसने (दीन) धर्म को संसार पर सर्वोच्चता दी तो ख़ुदा तआला के समीप दोषी ठहरता है। हम इस दुनिया में देखते हैं कि इसके उद्देश्य प्राप्त करने के लिए जब तक काफ़ी हिस्सा अपना इनकी पूर्ति में ख़र्च न कर दे वे उद्देश्य प्राप्त होने असंभ्व हैं। उदाहरणतया अगर वैद्य एक दवाई (औषधि) और उसकी एक मात्रा निश्चित कर दें और एक बीमार वह मात्रा दवाई की तो नहीं खाता बल्कि थोड़ा भाग दवाई का खाता है तो उससे क्या लाभ होगा। एक व्यक्ति प्यासा है तो संभव नहीं कि एक बूंद पानी से उनकी प्यास दूर हो सके। इसी तरह जो एक व्यक्ति भूखा है वह एक निवाले से संतुष्ट नहीं

हो सकता। इसी प्रकार ख़ुदा तआला या उसके रसूल पर ज़बानी विश्वास ले आना या एक दिखावे के तौर पर बैअत कर लेना बिल्कुल बेकार है। जब तक इन्सान पूरी शक्ति से ख़ुदा तआला के मार्ग में लग न जाए। आत्मा का कल्याण इसी में है कि मनुष्य पूरे तौर पर वह भाग ले जो रूहानी जीवन के लिए ज़रुरी है केवल ये विचार कि मैं मुसलमान हू काफ़ी नहीं।

मैं नसीहत करता हूँ कि आपने जो सम्बन्ध मुझ से पैदा किया है ख़ुदा तआला इसमें बरकत डाले। इसको बढ़ाने और मज़बूत करने कि फ़िक्र में हर समय लगे रहें। लेकिन याद रहे कि केवल स्वीकार करना ही पर्याप्त नहीं जब तक अमली रंग से अपने आप को रंगीन न किया जाए।

अल्लाह तआला फ़र्माता है :-

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ

(अल् अनकबूत आयत 3)

अर्थात क्या मनुष्य ने यह सोच समझ लिया है कि हम ......(ईमान ले आये) कह कर ही छुटकारा पा लेंगे और क्या वे परखे नहीं जाएंगे तो वास्तिवक अर्थ यह है कि ये आज़माइश इसी लिये है कि ख़ुदा तआला देखना चाहता है कि क्या ईमान लाने वाले ने अभी दीन को दुनिया पर प्राथमिकता दी है या नही। आज कल इस युग में जब लोग ख़ुदा तआला के मार्ग को अपने इरादों के विरुद्ध पाते हैं या किसी स्थान पर अधिकारियों से उनको कुछ ख़तरा होता है तो वे ख़ुदा की राह (मार्ग) का इन्कार कर बैठते हैं। ऐसे लोग बेईमान हैं, वे नहीं जानते कि वास्तविक रूप में ख़ुदा ही सर्वोत्तम अधिकारी है। इसमें कुछ संदेह नहीं कि ख़ुदा तआला का मार्ग बहुत कठिन मार्ग है और यह बिल्कुल सत्य है कि जब तक इन्सान ख़ुदा तआला के मार्ग में अपनी खाल अपने हाथ से न उतार ले तब तक वह खुदा की दृष्टि में प्रिय नही होता। हमारे समीप भी एक बेवफ़ा नौकर किसी के योग्य नहीं। जो नौकर (सिदक़) सच्चाई और वफ़ा नहीं दिखलाता वह कभी स्वीकृत नहीं होता। इसी प्रकार ख़ुदा के दरबार में वह व्यक्ति निम्न दर्जे का असभ्य है जो कुछ दिनों के सांसारिक लाभ पर दृष्टि लगा कर ख़ुदा तआला को छोड़ता है।

बैअत (दीक्षित) का अर्थ ख़ुदा तआला को जीवन अर्पित कर देना है। इसका अर्थ यह है कि हमने अपना जीवन आज ख़ुदा तआला के हाथ बेच दिया। ये पूर्णतया ग़ल्त है कि खुदा तआला के मार्ग में चलकर अन्ततः कोई व्यक्ति हानि उठाए। सच्चा कभी कोई हानि नहीं उठा सकता। हानि उसी की है जो झूठा है जो दुनिया के लिए बैअत को और वचन को जो अल्लाह तआला से उसने किया है तोड़ रहा है वह व्यक्ति जो केवल संसार के भय के कारण ऐसे कार्य करता है वह याद रखे कि मृत्यु के समय कोई बादशाह या अधिकारी उसे छुड़ा न सकेगा इन्सान ने मरने के बाद सबसे बड़े फैसला करने वाले के पास जाना है जो उस से पूछेगा कि तूने मेरा ख़्याल क्यों न किया।

मसीह की मृत्यु का वर्णन

और हमारी समस्याएं तो वे भी पूर्णत्या स्पष्ट हैं। उदाहरणतया क़ुर्आन करीम की यह आयत :-

فَلَمَّا تَوَفَّيۡتَنِيۡ كُنۡتَ اَنۡتَ الرَّقِيۡبَ عَلَيۡهِمۡ

इसमें एक उत्तर और एक प्रश्न है। ख़ुदा तआला मसीह अलैहिस्सलाम से पूछेगा कि क्या तूने लोगों को ऐसी शिक्षा दी थी कि मुझे और मेरी माता को पूज्य जीवित बना लेना? तो वे उत्तर में यह कहेंगे कि ऐ ख़ुदाया! जब तक मैं जीवित रहा और उनमें रहा मैंने तो उनको ऐसी शिक्षा नहीं दी। हां मगर जब तूने मुझे मृत्यु दे दी तो फिर तू ही उनका निरीक्षक था मुझे कोई ज्ञान नहीं कि मेरे पीछे उन्होंने क्या किया। यह कैसी मोटी बात है कि स्वयं मसीह अलैहिस्सलाम अपने मृतक होने को स्वीकार करते हैं वह कहते हैं। कि अगर ईसाई बिगड़े तो मेरी मृत्यु के पश्चात बिगड़े। जब तक मैं उनमें जीवित रहा तब तक वे सही सिद्धान्त पर क़ाईम थे। अब अगर ईसाई बिगड़ गए है तो ज़रुर मसीह मर चुका है और अगर मसीह आज तक नहीं मरा तो ईसाई भी नहीं बिगड़े। और अगर ईसाई नहीं बिगड़ा तो आवश्य ही हज़रत मसीह की ख़ुदाई का सिद्धान्त भी सही है। फिर मसीह का यह कह देना कि मुझे तो उनके बिगड़ने का ज्ञान ही नहीं जैसा कि इसी आयत में पाया है जाता है, क्या ये उत्तर उनका झूठा नहीं होगा? अगर उनका दोबारा संसार में आना सही है, क्योंकि प्रश्न उत्तर तो क़यामत को होगा और अगर उन्होंने दोबारा दुनिया में आकर चालीस वर्ष जीवित रहना है और इसाइयों और काफ़िरों को क़त्ल करके इस्लाम फैलाना है तो अवश्य ही उन्होंने ईसाइयों की बिगड़ी हुई दशा को देख लिया है और इस बिगड़ी हुई दशा को देखकर वह दोबारा इस दुनिया से चले जाएंगे तो फिर हज़रत मसीह का यह जवाब देना ख़ुदा के समीप झूठ ठहरता है। क्या वे सर्वोच्च अधिकारी न कहेगा कि तू दोबारा दुनिया में गया और तूने देख लिया कि तेरी क़ौम बिगड़ चुकी थी। एक सांसारिक अधिकारी के सामने ग़लतब्यानी, झूठी कसम एक ख़तरनाक अपराध है, तो क्या एक अंतर्यामी हाकिम के दरबार में ऐसा झूठा ब्यान दिया जा सकता है ?... तो परिणाम स्वरूप इस आयत ने बड़ी सफाई के साथ एक ओर मसीह की मृत्यु (वफ़ात) को प्रमाणित कर दिया और दूसरी ओर उनके दोबारा दुनिया में आने का खंडन किया (झुठलाया)। इसी के साथ जब हम हदीसों पर विचार करते हैं तो वहां से भी यही (मसीह की मृत्यु) का परिणाम निकलता है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया और यह सर्वसम्मित (मुतफ़िक अलैहे) हदीस है कि मैंने हज़रत मसीह को हज़रत यहया के साथ देखा। हज़रत यहया का मर जाना और उनका इस जमाअत में प्रवेश करना जिनकी मौत हो चुकी है प्रमाणित बात है। अब यह कैसे हो सकता है कि मसीह बग़ैर मरे किसी ऐसे आदमी के साथ बैठे हो जो दुनिया से मर चुका है अब एक ओर ख़ुदा का कथन और दूसरी ओर (रोईयत) रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वफ़ाते मसीह और उनका दोबारा दुनिया में वापस न आना पूर्णतया प्रमाणित हो गया। अब भी यह लोग अगर हयाते मसीह (मसीह के जीवित होने) के सिद्धान्त से बाज़ न आएं तो यही समझा जाएगा कि सच्ची हिदायत और सौभाग्य केवल ख़ुदा तआला की ओर से ही मिलता है।

आने वाला मसीह उम्मती होगा और अन्य निशान

रहा यह कि आने वाला कौन है? इसका फ़ैसला भी क़ुर्आन और हदीस में कर दिया है। 'सूरः नूर'

में साफ़ तौर पर वर्णन किया है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़े (उत्तराधिकारी) इस उम्मत में से होंगे। बुखारी और मुस्लिम का भी यही मत है कि आने वाला मसीह इसी उम्मत में से होगा, अब एक ओर क़ुर्आन व हदीस से 'बनी इसराईली' मसीह की मौत और दोबारा न आने का वर्णन करते हैं। दूसरी ओर यही क़ुर्आन और हदीस आने वाले मसीह को इसी उम्मत में से ठहराते हैं, तो फिर इन्तज़ार किस बात का है?

अब निशानियों को भी देख लिया जाए। शताब्दी के सिरे पर मुजद्दिद का आना सबने स्वीकार किया है और यह भी माना है कि मसीह मुजद्दिद के तौर पर शताब्दी के सिर पर आएगा। शताब्दी में से 22 वर्ष गुज़र गए* और इस समय तक मुजद्दिद नज़र न आया। अत: इस शताब्दी के सिर पर जिस मुजद्दिद ने आना था वह कहाँ है? *(चौदहवीं शताब्दी पूरी गुज़र कर पन्द्रहवीं शताब्दी में से भी 29 वर्ष गुज़र गऐ हैं) अनुवादक

सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण का निशान

मेहदी का निशान सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण था जो रमज़ान में होना था। इन ग्रहणों पर भी आठ साल गुज़र गये महदी न आया (अब तो इस निशान पर 208 वर्ष गुज़र गए हैं अनुवादक। अगर यह कहा जाए कि निशान तो हो गया लेकिन साहिबे निशान (जिसके पक्ष में निशान पूरा होना था) बाद में आएगा, तो यह अकीदा बड़ा बिगाड़ पैदा करने वाला है बल्कि बिगाड़ों की बुनियाद डालने वाला होगा यदि एक समय के पश्चात इकट्ठे बीस आदमी महदी के पद के दावेदार हो जाएँ तो फिर उनमें कौन फैसला करेगा? आवश्यक है कि साहिबे निशान, निशान के साथ हो। यह लोग मंच पर चढ़ कर शताब्दी के आरम्भ को और सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण को याद किया करते और रोते थे, लेकिन जब वह समय आया तो यही लोग दुश्मन बन गए। हदीस के अनुसार सभी निशान पूरे हो गए, लेकिन यह लोग अपनी ज़िद से बाज़ नहीं आते। ग्रहण का महान निशान प्रकट हो गया लेकिन ख़ुदा तआला के इस निशान की क़दर न की गई।

प्लेग का निशान

इसी प्रकार सारे नबियों की पिछली किताबों और क़ुर्आन व हदीस में एक और मुसीबत की तरफ़ इशारा था जो ग्रहण के आसमानी निशान के पश्चात आने वाली थी और वह ताऊन (प्लेग) है वह भी मसीह के युग से सम्बंधित थी। यह एक ख़तरनाक मुसीबत है जिस की ओर हर एक नबी ने खोलकर और संक्षेप में इशारा किया है।

ताऊन आ गई, लाखों इन्सान तबाह हो गए और नहीं पता कि कब तक इसकी तबाही चलती रहेगी, लेकिन जिस मौऊद (जिस सुधारक के आने का वचन दिया गया था कि युग की पहचान का यह निशान है उसे अब तक इन लोगों ने नहीं पहचाना इसी तरह धरती और आकाश ने गवाही दी लेकिन इन गवाहियों को व्यर्थ समझा गया। ख़ुदा ग़ैरत वाला है और वह अपनी ग़ैरत दिखाएगा। एक दुनिदार अधिकारी नाफ़रमानी

को पसन्द नहीं करता, तो वह सबसे बड़ा हाकिम ख़ुदा कब इस नाफ़रमानी को बिना सज़ा के छोड़ेगा।

नई सवारी का निशान

एक और निशान इस युग का नई सवारी था जिसने ऊंटों को बेकार कर देना था। क़ुर्आन ने फ़र्माया है واذا العشار عطلت ‘ जब ऊंटनियां बेकार हो जाएंगी’ कह कर इस युग का पता बताया। हदीस ने मसीह के निशान में यूं कहा :- ليترکن القلاص فلا يسعى عليها फिर यह निशान, क्या पूरा ना हुआ?

यहां तक कि उस प्रदेश में भी जहां आज तक ऊंटनी की सवारी थी और बिना ऊंटनियों के गुज़ारा न था, वहां भी इस (नई) सवारी का इन्तिज़ाम हो गया है और कुछ वर्षों में ऊंठों की सवारी का नामो निशान न मिलेगा। ऊंठनियां बेकार हो गईं। निशान पूरे हो गए लेकिन जिसके लिए यह निशान था वह पहचाना न गया। क्या यह काम भी मेरे वस में थे कि एक ओर तो मैं दावा करुं और दूसरी ओर यह निशान पूरे होते जाएं, क्या प्रकृति के नियमों में भी मेरा भी दख़ल है, जो नियत् ‘ग्रहण का मौऊदै’ पैदा कर लेता। अथवा मेरे हाथ कोई ऐसे साधन है जिन से धरती पर ‘मौऊद ताऊन’ पैदा हो गई? या हज का रोकना कि जो यह भी मसीह का निशान था। क्या यह भी मेरे इशारे (संकेत) से हुआ? इसी प्रकार बीसीयों निशान मसीह से संम्बन्धित थे, वे सब पूरे हो गए। ख़ुदा तआला ने कौन सी दलील को उन पर पूरा नहीं किया, लेकिन इनका इन्कार अभी इस तरह है।

वास्तविकता यह है कि ज़माने में दैहरिय्यत (नास्तिकता) फ़ैली हुई है। जो धीरे-धीरे सब दिलों को प्रभावित कर रही है। अल्लाह का डर दिन प्रतिदिन समाप्त हो रहा है। कान रखते हैं पर सुन नहीं सकते। आँखे रखते हैं पर देखते नहीं। दिल रखते हैं पर नहीं समझते। यही कारण है कि इन्कारी हैं – वरना तो बात बहुत स्पष्ट थी। मेरी किताबों के अध्य्यन से यह बात पूर्णतया स्पष्ट और प्रमाणित हो सकती है। अब उनके पास कोई उत्तर नहीं। ख़ुदा तआला ने मज़बूत दलीलों से उनकी जड़ काट दी है परन्तु यह नहीं देखते।

मामूर की पहचान के तीन तरीके

ख़ुदा की तरफ़ से भेजे गये एक व्यक्ति की पहचान के तीन तरीके हैं:- 1. नक्ल (इलाही किताबों के प्रमाण और भविष्यवाणियां 2. अक़्ल (अकली प्रमाण) और 3. ईश्वरीय सहायता। अब देखना चाहिए कि यह तीनों बातें इस सिलसिले की समर्पक है। दानियाल और दूसरे नबियों ने तो इस का आने का ज़माना निश्चित कर दिया है।

यहाँ तक कि शताब्दी और साल निश्चित कर दिया है। सारे ईसाइयों में एक प्रकार की घबराहट पैदा हुई है। क्यूँ कि पुरानी पुस्तकों के अनुसार मसीह के आने का समय हो चुका है। और मसीह अभी तक आया नहीं इसलिए कुछ उल्मा विवश होकर इस तर्फ गए हैं कि मसीह के दूसरी बार आने का भाव कलीस (इसाईयत) की उन्नति से है जो हो चुकी है।

(अलबदर 8 अगस्त 1904)

इसी प्रकार हमारी किताबों के अनुसार भी मसीह के आने का ज़माना यही है। होजाजुल किरामा के लेखक ने लिखा है ? कि सब अहल – ए- कशूफ इसी तर्फ गए हैं कि मसीह के दोबारा आने के लिए चौदहवीं सदी निश्चित है। शाह वली उल्लाह साहिब ने भी इसी ज़माने के लिए उसे चिराग़ उद्-दीन कहा है परिणाम स्वरुप प्रत्येग बुज़ुर्ग ने जो ज़माना निश्चित किया है वो चौदहवीं सदी से आगे नहीं गया। यद्यपि उनमें कुछ विरोधाभास हैं। चौदहवीं सदी में संकेत इस ओर था कि इस्लाम धर्म चौदहवीं रात के चाँद के समान इस ज़माने में चमक उठेगा।

जिस प्रकार चाँद का कमाल चौदहवीं रात को होता है उसी प्रकार इस्लाम का कमाल सारी दुनिया में चौदहवीं सदी में प्रकट होगा।

13 वीं शताब्दी का अंधकार इन लोगों में मशहूर है। कुछ कहते हैं कि इस शताब्दी के विद्वानों और उलामा से भेड़ियों ने भी मुक्ति माँगी थी। यह लोग चौदहवीं शताब्दी की प्रतीक्षा कर रहे थे परन्तु जब शताब्दी आ गई तो अपनी बद किस्मती के कारण इन्कार कर गए।

अक्ल के नज़दीक भी मसीह का ज़माना यही लगता है। इस्लाम इतना कमज़ोर हो गया है कि एक समय में एक व्यक्ति के धर्मभ्रष्ट हो जाने से इसमें शोर पड़ जाता था। परन्तु अब लाखों लोग धर्म भ्रष्ट हो गए। दिन रात इस्लाम के विरुद्ध पुस्तकें लिखी जा रही हैं। इस्लाम को जड़ से उखेड़ने के लिए कई प्रकार के निर्णय लिए जा रहे हैं। अक़्ल पसन्द नहीं करती कि जिस ख़ुदा ने

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ

(अर्थात हमने ही इस क़ुर्आन को उतारा है और हम ही इसकी रक्षा करेंगे) का वचन दिया। वह इस समय इस्लाम की सुरक्षा न करे और चुप रहे। यह ज़माना किस प्रकार की मुसीबत का ज़माना है कि शरीफ़ लोगों की सन्तान इस्लाम की दुश्मन होकर गिर्जा घरों में चली गई और खुले आम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनादर हो रहा है। हर एक प्रकार की गाली और अपशब्द में उनको याद किया जाता है। इन सब बातों के यदि देखा जाए तो अक़्ल कहती है कि यही समय ख़ुदा तआला के समर्थन का है। और मैं तुम को सच कहता हूँ कि यदि यह सिलसिला स्थापित न होता तो इस्लाम बर्बाद हो चुका था, तो ख़ुदा तआला के अस्तित्व का यह भी एक निशान है कि ठीक समय पर ख़ुदा तआला ने इस सिलसिले को क़ायम किया और मुसीबत के समय इस्लाम को संभाला।

इलाही मदद अगर देखी जाए तो यहां भी एक बड़ा ख़ज़ाना है। ख़ुदा तआला ने अपने फ़ज़्ल से हज़ारों निशान मेरे हाथ पर प्रकट किए। यदि में इन सब निशानों को जमा करूँ जो प्रतिदिन मैं और मेरे साथ रहने वाले देखते हैं तो उनकी गिनती लगभग लाख हो जाती है इसके अतिरिक्त केवल ब्राहीने अहमदिय्या के कुछ इल्हामों को देखा जाए।

चौबीस वर्ष हुए कि यह किताब लिखी गई जो उस समय मक्का मदीना, मिसर, बुखारा, लंदन और ऐसा ही हिन्दुस्तान के हर एक भाग में पहुंच गई। कई एक पादरियों और दूसरे इस्लाम विरोधियों के घरों

में पहुंच गई। अब इस किताब में उदाहरणतया लिखा है कि ख़ुदा तआला की ओर से मुझे बताया गया है कि इस समय तू अकेला है और तेरे साथ कोई नहीं लेकिन एक समय आएगा कि लोग तेरे पास दूर दूर से आएंगे।

يأتون من كل فج عميق

तू लोगों में पहचाना जाएगा और तेरी प्रसिद्धि की जाएगी। तेरी सहायता और समर्थन को दूर दूर से लोग आएंगे फिर कहा कि लोग कसरत (अधिक मात्रा) से आएंगे और तू उनसे नम्रता और शिष्टाचार से पेश
हज़रत इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम की एक पुस्तक जो 1884 ई. में लिखी गई।
आना उनकी मुलाकात से मत घबराना।

ولا تصعر لخق الله ولا تسئم من النَّاس

फिर अन्त में फ़र्माया

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ وانتهى امر الزمان الينا۔ اليس هذا بالحق

अर्थात जब ख़ुदा तआला की विजय और सहायता आएगी और युग का हुक्म (आदेश) हमारी तरफ ही व्युत्पन्न होगा तो उस समय कहा जाएगा कि क्या यह सिलसिला सत्य नहीं? अब लाहौर और अमृतसर के लोग और ऐसा ही पंजाब के लोग इस बात से परिचित हैं कि बराहीने अहमदिया के प्रकाशित होने के समय मुझे कोई जानता नहीं था यहां तक कि क़ादियान में बहुत कम लोग होंगे जो मुझे पहचानते होंगे फिर ये बातें किस प्रकार पूरी हो रहीं हैं। अगर यह भविष्यवाणियां मुकम्मिल तौर पर अभी पूरी नहीं हुईं लेकिन जितनी आकाशवाणियां प्रकट हो रही हैं वह सत्याभिलाषी के लिए प्रर्याप्त हैं। अब क्या वह मेरी बनावट है कि एक इन्सान आज से चौबीस वर्ष पहले की घटनाओं का नक्शा खींच सकता है। क्या कोई कह सकता है कि वह हज़ारों प्राणि वर्ग का शरण स्थल होगा। मुख्यता जबकि एक समय तक ये मामले प्रकट न हुए हों। जिस से पूर्णत्या प्रकट होता है कि यह मामले किसी की चातुर्य का परिणाम नहीं हो सकते। इन मामलों को देख कर मैं कह सकता हूँ कि जितने निशान ख़ुदा तआला ने मेरे समर्थन में ज़ाहिर किए हैं वे अपनी संख्या और शान में ऐसे हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त सब नबियों और रसूलों से ऐसे प्रमाणित नहीं हुए परन्तु इसमें मेरा क्या गर्व है यह सब कुछ तो उस पाक नबी की फ़ज़ीलत है जिसकी उम्मत में होने का मुझे गर्व प्राप्त है।

आप ने जो आज मुझ से बैअत की है यह बीज बोने की तरह है। चाहिए कि आप अकसर मुझ से मिलते रहें और इस संम्बन्ध को मज़बूत करें जो आज कायम हुआ है। जिस शाख़ का सम्बन्ध वृक्ष से नहीं रहता वह आख़िर सूख कर गिर जाती है जो व्यक्ति जीवित ईमान रखता है वह दुनिया की परवाह नहीं रखता। दुनिया हर एक प्रकार से मिल जाती है। दीन को दुनिया पर प्रमुख रखने वाला ही मुबारक है परन्तु जो दुनिया को दीन पर प्राथ्मिकता देता है वह एक मुर्दा की तरह है जो कभी सच्ची सहायता प्राप्त नहीं कर सकता।

बैअत यह बैअत उस समय काम आ सकती है जब दीन को प्रमुख रखा जाए और उसको उन्नत करने के यत्न किए जाएँ। बैअत एक बीज है जो आज बोया गया। अब यदि कोई किसान केवल बीज बोने पर ही संतोष कर ले और फल प्राप्त करने के जो कर्तव्य हैं उनमें से कोई पूरा न करे। न भूमि को ठीक करे और न सिंचाई करे और न खाद ज़मीन में डाले और ही उसकी सुरक्षा करे तो क्या वो किसान किसी फल की आशा कर सकता है? बिल्कुल नहीं। उसका खेत ज़रूर बर्बाद होगा। खेत उसी का रहेगा जो पूरा ज़मींदार बनेगा। तो एक प्रकार का बीज आपने भी आज बोया है। ख़ुदा तआला जानता है कि किस की क़िस्मत में क्या है परन्तु सौभाग्यशाली वही है जो इस बीज को सुरक्षित रखे और अपने तौर पर उन्नति के लिए दुआ करता रहे। उदाहरणतया नमाज़ों में एक प्रकार का परिवर्तन होना चाहिए।

नमाज़ के बाद दुआ

मैं देखता हूँ कि आजकल लोग किस प्रकार नमाज़ पढ़ते हैं वह केवल टक्करें मारना हैं। उन की नमाज़ में इतनी लीनता और आनन्द भी नहीं होता जितना वह नमाज़ के बाद हाथ उठा कर दुआ में दिखाते हैं। काश यह लोग अपनी दुआएँ नमाज़ में ही करते। शायद उनकी नमाज़ों में लीनता पैदा हो जाती। इस लिए मैं आपको आदेश के तौर पर कहता हूँ कि फ़िलहाल आप बिल्कुल नमाज़ के बाद दुआ न करें। मेरा मतलब यह नहीं कि नमाज़ के बाद दुआ करने की मनाही है परन्तु मैं चाहता हूँ कि जब तक नमाज़ में आन्नद और लीनता पैदा न हो तब तक नमाज़ के बाद दुआ करने में नमाज़ के आन्नद को मत गंवाओ। हाँ जब यह लीनता पैदा हो जाए तो फिर कोई हर्ज नहीं। बेहतर है कि नमाज़ में दुआएँ अपनी भाषा में मांगो। जो स्वाभाविक जोश किसी की मातृभाषा में होता है वह किसी दूसरी भाषा में बिल्कुल नहीं पैदा हो सकता। तो नमाज़ों में क़ुर्आन और मासोरह दुआओं (हदीस की दुआएँ) के बाद अपनी ज़रुरतों को दुआ के रूप में अपनी भाषा में ख़ुदा तआला के सम्मुख पेश करो ताकि धीरे-धीरे तुम को आन्नद आए।

अहमदी नाम क्यूँ रखा गया

एक मौलवी साहिब आए और उन्होंने प्रश्न किया कि ख़ुदा तआला नें हमारा नाम मुसलमान रखा है आपने अपने समप्रदाय का नाम अहमदी क्यूँ रखा है यह बात*

هو سمّٰكم المسلمين

(अर्थात उस ख़ुदा ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है *(अलहज : 79) के विरुद्ध है। इसके उत्तर में हज़रत ने फ़र्माया :- इस्लाम बहुत पवित्र नाम है और क़ुर्आन शरीफ़ में यही नाम आया है लेकिन जैसा कि हदीस शरीफ़ में आ चुका है इस्लाम के 73 फ़िर्के हो गए हैं। और प्रत्येक फ़िर्का अपने आप को मुसलमान कहता है। इन्ही में एक राफज़ियो (शियों) का ऐसा फ़िर्का है जो सिवाए दो तीन व्यक्तियों के सब सहाबा रज़ी अल्लाह अन्हुम को अपशब्दो से याद करते है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नियों को गालियां देते हैं। औलिया अल्लाह को बुरा कहते हैं। फिर भी मुसलमान कहलाते हैं। ख़ारजी हज़रत अली

रज़ी अल्लाह और हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्हुम को बुरा कहते हैं और फिर भी मुसलमान नाम रखते हैं शाम में एक फ़िर्का यज़ीदिया है जो इमाम हुसैन रज़ी अल्लाह के लिए अपशब्द कहते हैं और मुसलमान बने फिरते हैं। इसी मुसीबत को देख कर पहले समय के लोगों ने अपने आप को ऐसे लोगों से अन्तर करने के लिए अपने नाम शाफ़ी, हम्बली, * आदि रखे। आज कल नेचरियों का एक ऐसा फ़िर्का निकला है जो जन्नत, दोज़ख, वही, फ़रिश्ते, सब बातों का इन्कार करते हैं। यहां तक कि सय्यद अहमद खां का विचार था कि क़ुर्आन मजीद भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विचारों का परिणाम है, और ईसाइयों से सुनकर यह क़िस्से लिख दिए हैं। इस लिए इन सब सम्प्रदायों से अपने आप को अलग करने के लिए इस फ़िर्का का नाम अहमदिय्या रखा गया।

हज़रत यह भाषण दे रहे थे कि इस मौलवी ने फिर प्रश्न किया कि क़ुर्आन शरीफ़ में तो आदेश है कि لا تفرّقوا और आप ने तो यह फूट डाल दी।

हज़रत ने फ़र्माया :-

हम तो फूट नहीं डालते। अपितु हम फ़ूट दूर करने के लिए आए हैं।

यदि अहमदी नाम रखने में अनादर है तो फिर शाफ़ी, हम्बली कहलाने में भी अनादर है मगर यह नाम उन बड़े लोगों के रखे हुए हैं जिन को आप भी नेक मानते हैं। वो व्यक्ति बड़ा अभागा होगा जो ऐसे लोगों पर एतराज़ करे। और उनको बुरा कहे। केवल अन्तर करने के लिए उन लोगों ने अपने

*इसी प्रकार विभिन्न वर्गों ने देवबन्दी, बरेलवी, चकड़ालवी, नकश्बन्दी आदि नाम रख लिये हैं।

यह नाम रखे थे। हमारा काम अल्लाह की ओर से है और हम पर ऐतराज़ करने वाला ख़ुदा तआला पर ऐतराज़ करने वाला ख़ुदा हम पर ऐतराज़ करता है। हम मुसलमान हैं और अहमदी एक अन्तर करने के लिए रखा गया नाम है।

यदि केवल मुसलमान नाम हो तो पहिचान कैसे होगी ख़ुदा तआला एक जमाअत बनाना चाहता है। और इसका दूसरों से अन्तर होना आवश्यक है। बिना अन्तर किए इसके लाभ ज़ाहिर नहीं होते। और केवल मुसलमान कहलाने से अन्तर नहीं किया जा सकता।

इमाम शाफ़ी और इमाम हन्बल आदि का ज़माना भी ऐसा था कि उस समय बिदअतें (दीन में नई बातें अपनी ओर से घड़ लेना) आरम्भ हो चुकी थीं। यदि उस समय यह नाम न होते तो उचित और अनुचित में अन्तर नहीं हो सकता था। हज़ारों बुरे व्यक्ति मिले जुले रहते। यह चार नाम इस्लाम के लिए चार दीवारी के समान थे। यदि यह लोग पैदा न होते तो इस्लाम ऐसा संदिग्ध मज़हब हो जाता कि बिदअती और गैर बिदअती में अन्तर न हो सकता। अब ऐसा भी समय आ गया है कि घर-घर एक मज़हब है। हमको मुसलमान होने से इन्कार नहीं मगर फूट दूर करने के लिए यह नाम रखा गया है। पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तौरेत वालों से विरोध किया और साधारण लोगों की दृष्टि में फ़ूट डालने वाले बने। परन्तु वास्तविक्ता यह है कि यह फूट ख़ुदा स्वयं डालता है। जब खोट और मिलावट अधिक हो जाती है ख़ुदा तआला स्वयं चाहता है कि अन्तर किया जाए।

मौलवी साहिब ने फिर वही प्रश्न किया कि ख़ुदा ने तो कहा कि :

هو سمٰكم المسلمينؕ

फ़र्माया :- क्या इसमें राफज़ी और बिदअती और आजकल के *नाजाएज़ काम करने वाले मुसलमान शामिल हैं? क्या इसमें आजकल के वह लोग शामिल हैं जो अबाहती* हो रहे हैं और शराब तथा बदकारी को भी इस्लाम में उचित तथा जाएज़ जानते हैं।

बिल्कुल नहीं, इसके संबोधक तो सहाबा रज़ी अल्लाह अन्हुम हैं। हदीस शरीफ़ में आता है कि (हिजरत के) तीन सदियों पश्चात फ़ैज़ अवज (टेड़ा फ़िरका) का ज़माना होगा। जिसमें झूठ का बोलबाला होगा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस समय के लोगों के बारे में फ़र्माया है। और ना मेरा उनसे कोई सम्बन्ध है। वह लोग मुसलमान कहलाएगें मगर मेरे साथ उनका कोई सम्बन्ध न होगा

जो लोग इस्लाम के नाम से इन्कार करें या इस नाम से घृणा करें उन को तो में धिक्कारता हूँ। मैं कोई बुराई नहीं लाया । जैसा कि हन्बली शाफ़ी आदि नाम थे ऐसा ही अहमदी भी नाम है। बल्कि अहमद के नाम में इस्लाम के संस्थापक अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ समन्वय है। और यह समन्वय दूसरे नामों में नहीं। अहमद, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम है इस्लाम अहमदी है और अहमदी इस्लाम है। हदीस शरीफ़ में मोहम्मदी रखा गया है। कई बार शब्द अनेक होते हैं मगर अर्थ एक ही होता है। अहमदी नाम एक विशेष निशान है। आजकल इतना तूफ़ान ज़माने में है कि शुरु से लेकर अब तक कभी नहीं हुआ। अइसलिए कोई नाम आवश्यक था। ख़ुदा तआला के समीप जो मुसलमान हैं वह अहमदी हैं। बदर प्रति 1 पृष्ठ 2:4 3 नवम्बर 1905 (मलफ़ूज़ात प्रति 8 पृष्ठ 180 : 182)

शत्रुता और विरोध पर धैर्य रखने की नसीहत

एक आदमी ने कहा कि मेरे गाँव में एक मौलवी जो मदरसे में सेवक हैं। बहुत विरोधी हैं और मुझे बहुत कष्ट देता है। हुज़ूर दुआ करें कि ख़ुदा तआला इसका तबादला वहाँ से कर दे। हज़रत अक़्दस ने इस अवसर पर मुस्कुकाते हुए इस तरह समझाया कि इस जमाअत में जब दाख़िल हुए हो तो इसकी शिक्षा पर अमल करो। यदि कष्ट ना पहुँचे तो फिर सवाब (पूण्य) कैसे हो। पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का में 13 वर्ष दु:ख सहन किए। तुम लोगों को उस समय के दु:खों और मुसीबतों की ख़बर नहीं और न वह तुमको पहुँची हैं। मगर आप ने सहाबा रज़ी अल्लाह अन्हुम को सबर (धैर्य) करने की ही शिक्षा दी। अन्तत: सारे शत्रु ख़त्म हुए। एक समय निकट है कि तुम देखोगे कि यह शरारती लोग भी नज़र न आएँगें। अल्लाह तआला ने यह इरादा किया है कि इस पाक जमाअत को सारे संसार में फैलाएगा। अब इस समय यह लोग तुम्हारी संख्या कम देख कर तुम्हें कष्ट देते हैं मगर जब यह जमाअत बड़ी हो जाएगी तो यह सब स्वयं ही चुप हो जाएँगें। यदि ख़ुदा तआला चाहता तो यह लोग दु:ख न देते और दु:ख देने वाले पैदा न होते मगर ख़ुदा तआला उन के द्वारा धैर्य का उपदेश देना चाहता है। थोड़े समय धैर्य करने के

बाद देखोगे कि कुछ भी नहीं है। जो व्यक्ति कष्ट देता है वह या तो तौबा कर लेता है या समाप्त हो जाता है। कई पत्र इस प्रकार के आते हैं कि हम गालियां देते थे और इसे पुण्य मानते थे परन्तु अब तौबा करते हैं और बैअत करते हैं। सबर करना भी एक प्रकार की इबादत है। ख़ुदा तआला फ़र्माता है कि धैर्य करने वालों को वो बदले मिलेंगे कि जिन की कोई गिनती नहीं है। अर्थात उन पर अनगिनत इनाम होंगे।

यह बदला केवल सबर करने वालों के लिए है। दूसरी इबादत के लिए ख़ुदा का यह वचन नहीं। जब एक व्यक्ति एक (ख़ुदा) की सहायता में जीवन बिताता है तो जब उसे दु:ख पर दु:ख पहुचता है तो अंतत: सहायता करने वाले को गैरत आती है और वह दु:ख देने वाले को नष्ट कर देता है। इसी प्रकार हमारी जमाअत ख़ुदा तआला की हिदायत में है। और कष्ट और दु:ख सहने करने से ईमान मज़बूत हो जाता है। धैर्य जैसी कोई चीज़ नहीं हैं। (मलफ़ूज़ात प्रति 4 पृष्ठ 234235)

मस्जिदों की आवश्यकता

इस समय हमारी जमाअत को मस्जिदों की बहुत आवश्यकता है। यह ख़ुदा का घर होता है। जिस गाँव या शहर में हमारी जमाअत की मस्जिद स्थापित हो गई तो समझो कि जमाअत की तरक्की की बुनियाद पड़ गई। यदि कोई ऐसा गाँव हो या शहर जहाँ मुसलमान कम हों या न हों और वहाँ इस्लाम की उन्नति करनी हो तो एक मस्जिद बना देनी चाहिए। फिर ख़ुदा स्वयं मुसलमानों को खींच लाएगा। परन्तु शर्त यह है कि मस्जिद की स्थापना में निय्यत दीनदारी की हो। केवल ख़ुदा के लिए ही इसे किया जाए व्यक्तिगत उद्देश्यों या किसी बुराई का बिल्कुल दख्ल न हो तब ख़ुदा बरकत देगा।

यह आवश्यक नहीं कि मस्जिद आलीशान तथा पक्की इमारत की हो केवल ज़मीन रोक लेनी चाहिए और वहाँ मस्जिद की हदबन्दी कर देनी चाहिए। और बाँस आदि का कोई छप्पर आदि डाल दो कि वर्षा से आराम हो। ख़ुदा तआला बनावट को पसन्द नहीं करता। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मस्जिद कुछ खजूरों की शाखों की थी और इसी तरह चली आई। फिर हज़रत उसमान रज़ी अल्लाह अन्हु ने इस लिए कि इन को इमारत का शौक़ था अपने समय में उसे पक्का बनवाया। मुझे विचार आता है कि हज़रत सुलैमान और उसमान एक ही बनावट के नाम हैं।

शायद इसी वजह से उनको इन बातों का शौक़ था। जमाअत की अपनी मस्जिद होनी चाहिए। जिसमें अपनी जमाअत का इमाम हो और वह उपदेश वग़ैरह करे और जमाअत के लोगों को चाहिए कि सब मिल कर उसी मस्जिद में नमाज़ बा जमाअत अदा किया करें जमाअत और संगठन में बहुत बरकत है। तफ़रीक से फूट पैदा होती है और यह समय ऐसा है कि अब मेल जोल और इत्तिफ़ाक़ को बढ़ावा देना चाहिए और छोटी छोटी बातों को दृष्टिगत कर देना चाहिए जो फूट डालने का कारण बनती हैं।

(मलफ़ूज़ात जिल्द 4)

* * *

हे वे लोग जो मेरी जमाअत में हो!

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने शब्दों में

हे वे लोग जो मेरी जमाअत में हो!

"हे वे सभी लोगो! जो अपने आपको मेरी जमाअत में सम्मिलित समझते हो, आसमान पर तुम उसी समय मेरी जमाअत में गिने जाओगे जबकि रास्ती (सन्मार्ग) पर चलोगे। अत: अपनी पाँचों नमाज़ें ऐसी सतर्कता एवं एकाग्रचित हो कर पढ़ो कि मानो तुम ख़ुदा तआला को देखते हो। अपने रोज़ों (उपवासों) को सच्चाई के साथ पूरा करो। प्रत्येक व्यक्ति जिस पर ज़कात देना अनिवार्य है, वह ज़कात दे और जिस पर हज्ज फ़र्ज़ हो चुका है और (मार्ग में) कोई बाधा नहीं वह हज्ज करे। सुकर्मों को संवार कर करो और कुकर्मों को घृणित समझ कर त्याग दो। निश्चयपूर्वक याद रखो कि कोई कर्म ख़ुदा तक नहीं पहुँच सकता जो तक़्वा (संयम) से खाली हो। प्रत्येक पुण्य की जड़ 'तक़्वा' है। जिस शुभकार्य में यह जड़ नष्ट नहीं होगी वह कर्म भी नष्ट नहीं होगा। विभिन्न प्रकार के कष्टों और संकटों से तुम्हारी परीक्षा भी अवश्य ली जाएगी जैसा कि पहले मोमिनों से परीक्षा ली गई। अत: सावधान रहो। ऐसा न हो कि ठोकर खाओ। ज़मीन तुम्हारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकती अगर आसमान से तुम्हारा पुख़्ता सम्बन्ध है। जब कभी तुम अपनी हानि करोगे तो अपने हाथों से करोगे, न कि शत्रु के हाथों से। यदि समस्त सांसारिक मान-सम्मान जाता रहे तो ख़ुदा तुम्हें आसमान पर एक शाश्वत सम्मान प्रदान करेगा। अत: तुम उसको मत छोड़ो।

तुम्हें दु:ख अवश्य दिए जाएंगे और अपनी आशाओं से वंचित किए जाओगे। परन्तु ऐसी परिस्थितियों में हताश मत हो क्योंकि तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारी परीक्षा लेता है कि तुम उसके मार्ग में दृढ़ संकल्प हो अथवा नहीं? यदि तुम चाहते हो कि आसमान पर फ़रिश्ते भी तुम्हारी प्रशंसा करें तो तुम मारें खाओ और प्रसन्न रहो, गालियां सुनो और (प्रभु का) धन्यवाद करो, असफ़लता देखो परन्तु (ख़ुदा से) रिश्ता न तोड़ो। तुम ख़ुदा की अन्तिम जमाअत हो। अत: ऐसे शुभ कार्य करो जो पुण्य की चरमसीमा को छू जाएं। प्रत्येक वह जो तुम में से आलसी हो जाएगा वह एक गन्दी चीज़ की तरह जमाअत से बाहर फैंक दिया जाएगा और निराश होकर मरेगा और ख़ुदा का कुछ न बिगाड़ सकेगा। देखो मैं बहुत ख़ुशी से यह सूचना देता हूँ कि तुम्हारा ख़ुदा वास्तव में मौजूद है। यद्यपि सब उसी की सृष्टि है परन्तु वह उसको चुन लेता है जो उसको चुनता है। वह उसके पास आ जाता है जो उसके पास जाता है। जो उसको सम्मान देता है वह भी उसको सम्मान देता है। तुम अपने दिलों को शुद्ध करके ज़बानों, आँखों और कानों को पवित्र करके उसकी ओर आ जाओ, क्योंकि वह तुम्हें अंगीकार करेगा।"

क़ुर्आन को सम्मान देने वाले आसमान पर सम्मानित किए जाएंगे

तुम्हारे लिए एक आवश्यक शिक्षा यह है कि क़ुर्आन शरीफ़ को परित्यक्त वस्तु की तरह न छोड़ो क्योंकि तुम्हारी इसी में ज़िन्दगी है। जो लोग क़ुर्आन को इज़्ज़त देंगे, वे आसमान पर इज़्ज़त पाएंगे। जो

लोग हरेक 'हदीस' और हर एक कथन पर क़ुर्आन को श्रेष्ठता प्रदान करेंगे उनको आसमान पर श्रेष्ठता प्रदान की जाएगी। मानवजाति के लिए इस धरती पर अब कोई किताब नहीं, सिवाए क़ुर्आन के। समस्त मानवजाति के लिए अब कोई रसूल और सिफ़ारिश करने वाला नहीं सिवाए मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के। अत: तुम कोशिश करोकि उस तेजस्वी और महाप्रतापी अवतार के साथ सच्चा प्रेम करो और किसी को उस पर किसी तरह की बड़ाई मत दो ताकि आसमान पर तुम मोक्ष प्राप्त करने वालों में लिखे जाओ। और याद रखो कि मोक्ष वह चीज़ नहीं जो मरणोपरान्त प्रकट होगी। बल्कि वास्तविक मोक्ष वह है जो इसी जीवन में अपना प्रकाश दिखलाता है। मोक्ष प्राप्त करने वाला कौन है? वह जो विश्वास रखता है कि ख़ुदा सच है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस (ख़ुदा) के और समस्त प्राणी जाति के बीच शफ़ी हैं और आसमान के नीचे उनके समतुल्य कोई रसूल नहीं और न क़ुर्आन शरीफ़ के समकक्ष कोई पुस्तक है। किसी के लिए ख़ुदा ने न चाहा कि वह हमेशा जीवित रहे परन्तु यह सर्वोत्तम नबी (अवतार) हमेशा के लिए जीवित है। उसके शाश्वत जीवन के लिए ख़ुदा ने यह व्यवस्था की है कि उसकी शरीअत और आध्यात्मिकता का हित क़यामत तक जारी रखा और अन्तत: उस के आध्यात्मिक हित से इस मसीह मौऊद को संसार में भेजा जिसका आना इस्लाम की इमारत की पूर्ति के लिए आवश्यक था। क्योंकि यह आवश्यक था कि यह दुनिया ख़त्म न हो जब तक मुहम्मदी कड़ी के लिए एक आध्यात्मिक मसीह न दिया जाता जैसा कि मूसवी सिलसिले को दिया गया था। इसी बात की ओर यह 'आयत' संकेत करती है :

اِهۡدِ نَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ • صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡهِمۡ

'हमें सीधी राह पर चला। उन लोगों की राह पर (चला) जिन पर तूने इन्आम किया (अर्थात् जिन को पुरस्कार प्रदान किया)'

मूसा अलैहिस्सलाम ने वह धन प्राप्त किया जिस को प्रारम्भिक युग के लोग खो चुके थे। और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वह धन पाया जिसको मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम खो चुकी थी। अब मुहम्मदी सिलसिला मूसवी सिलसिले का उत्तराधिकारी है, परन्तु शान में इससे हज़ारों दर्जे ऊँचा। यह मसीले मूसा, मूसा से बढ़कर और मसीले इब्ने मर्यम, इब्ने मर्यम से बढ़कर और वह मसीह-मौऊद न केवल कालान्तर के संदर्भ से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उपरान्त चौदहवीं शताब्दी में अवतीर्ण हुआ जैसा कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के उपरान्त चौदहवीं शताब्दी में प्रकट हुए थे, अपितु वह ऐसे समय में आया जब कि मुसलमानों की वही दशा थी जो हज़रत मसीह के समय में यहूदियों की थी। अत: वह मैं ही हूँ। जो व्यक्ति मुझ से सच्ची बैअत (दीक्षित होना) करता है, और सच्चे दिल से मेरा अनुयायी बनता है और मेरा आज्ञाकारिता के बंधन में बंध कर अपने समस्त उद्देश्यों का परित्याग करता है, वही है जिसकी सकंटकालीन दिनों में मेरी आत्मा सिफ़ारिश करेगी।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खातमुन्नबिय्यीन (अन्तिम अवतार) हैं

विश्वास अथवा आस्था का जहां तक संबंध है ख़ुदा जो तुम से चाहता है वह यही है कि ख़ुदा एक है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके अवतार हैं और खातमुन्नबीय्यीन हैं और पदवी में सबसे बड़े और उच्च हैं। अब उन के उपरान्त कोई अवतार नहीं सिवाए उसके जिस को उनकी परम शिष्यता की चादर पहनाई गई क्योंकि सेवक अपनी स्वामी से अलग नहीं और न शाख़ अपने तने से अलग है। तुम अवश्य जान लो कि हज़रत ईसा सुपुत्र हज़रत मर्यम की मृत्यु हो चुकी है और मुहल्ला ख़ानयार, श्रीनगर (कश्मीर) में उनकी क़ब्र है। ख़ुदा तआला ने अपनी प्रिय पुस्तक (क़ुर्आन) में उनके मर जाने की सूचना दी है। मैं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शान से इन्कार नहीं करता। यद्यपि ख़ुदा ने मुझे सूचित किया है कि मसीहे मुहम्मदी, मसीहे मूसवी से उच्च है, फिर भी मैं हज़रत मसीह का बहुत सत्कार करता हूँ। क्योंकि मैं आध्यात्मिक रूप से इस्लाम में ख़ातमुल ख़लीफ़ा (अन्तिम ख़लीफ़ा) हूँ। जैसा कि हज़रत मसीह इस्राईली कड़ी के लिए अन्तिम ख़लीफ़ा थे। हज़रत मूसा के सिलसिले के लिए इब्ने मर्यम मसीह मौऊद थे और मुहम्मदी सिलसिले के लिए मैं मसीह मौऊद हूँ। अत: मैं आपका आदर करता हूँ जिन का समनाम हूँ। वह व्यक्ति मिथ्याभाषी और उपद्रवी है जो यह कहता है कि मैं हज़रत मसीह का आदर नहीं करता।

कौन मेरी जमाअत में है और कौन नहीं

इन सब बातों के बाद फिर मैं कहता हूँ कि यह मत ख़्याल करो कि हम ने दिखावे के लिए 'बैअत' कर ली है। दिखावा कोई चीज़ नहीं। ख़ुदा तुम्हारे हृदयों को देखता है और उसी के अनुसार तुमसे व्यवहार करेगा। देखो मैं यह कह कब तब्लीग़ (प्रचार) के उत्तरदायित्व से विमुक्त होता हूँ कि 'पाप' एक विष है, इसे मत खाओ। ख़ुदा की अवज्ञा करना एक गन्दी मौत है। इस से बचो। प्रार्थना करो कि तुम्हें शक्ति मिले। जो व्यक्ति प्रार्थना करते समय ख़ुदा को सर्वशक्तिमान नहीं समझता, सर्वकार्यसमर्थ नहीं समझता सिवाए जिनके सम्बन्ध में परमात्मा ने क करने का निर्णय किया हो वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो व्यक्ति झूठ और धोखे को नहीं छोड़ता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो व्यक्ति सांसरारिक लोभ में फंसा हुआ है और परलोक की ओर आँख उठा कर भी नहीं देखता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो व्यक्ति वास्तव में धर्म को सांसारिक विषयों पर प्रधानता नहीं देता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो व्यक्ति पूर्ण रूप से प्रत्येक बुराई और प्रत्येक दुष्कर्म अर्थात् मदिरापन, जुआ खेलने, परनारी को तकने, धरोहर को क्षति पहुँचाने, रिश्वत लेने और प्रत्येक अनुचित कार्य को नहीं छोड़ता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो व्यक्ति पांचों नमाज़ें नियमित रूप से नहीं पढ़ता, वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो व्यक्ति दुआ में व्यस्त नहीं रहता और विनम्रता और दीनभाव से ख़ुदा को याद नहीं करता, वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो व्यक्ति ऐसे दुश्चरित्र मित्र को नहीं छोड़ता जो उस पर दुष्प्रभाव डालता है, वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो व्यक्ति अपने माता-पिता का आदर नहीं करता, और उनके आदेशों जो पवित्र क़ुर्आन के विरुद्ध न हों, का पालन

नहीं करता और उनकी सेवा करने में उपेक्षा करता है, वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो व्यक्ति अपनी पत्नी और उसके बन्धुओं से नम्रता और मृदुल स्वभाव से व्यवहार नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो व्यक्ति अपने पड़ोसी को छोटी से छोटी भलाई से वंचित करता है, वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो व्यक्ति यह नहीं चाहता कि अपने अपराधी का अपराध क्षमा कर दे वह मलीन चरित्र और दुर्भावी है, वह मेरी जमाअत में से नहीं है। प्रत्येक आदमी जो अपनी पत्नी, या पत्नी अपने पति की धरोहर को क्षति पहुँचाती है, वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो व्यक्ति मुझे वास्तव में मसीह मौऊद व महदी माहूद नहीं समझता, वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो व्यक्ति मेरे आदेशों का पालन करने के लिए तैयार नहीं है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो व्यक्ति विरोधियों की जमाअत में बैठता है और उन की हां मे हां मिलाता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। प्रत्येक व्यभिचारी, चरित्रहीन, शराबी, हत्यारा, चोर, जूआबाज़, धरोहर को क्षति पहुँचाने वाला, रिश्वतख़ोर, दूसरों के धन पर अधिकार जमाने वाला, अत्याचारी, मिथ्याभाषी, जालसाज़ और उनके साथी और अपने भाईयों और बहनों पर दोष लगाने वाला, जो अपने कुकर्मों को नहीं त्याग करता और दुष्ट सभाओं को नहीं छोड़ता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। ये सब विष हैं। तुम इन विषैले पदार्थों को खा कर किसी प्रकार भी बच नहीं सकते। अन्धकार और प्रकाश एक स्थान पर एकत्र नहीं हो सकते। प्रत्येक जिसके स्वभाव में नाना प्रकार के विचार हैं और वह ख़ुदा के साथ साफ़ नहीं है। वह उस वरदान को कदापि नहीं प्राप्त कर सकता जो निर्मल हृदय वालों को मिलता है। क्या ही भाग्यशाली हैं वे लोग जो अपने हृदयों को साफ़ करते हैं और उनको हर प्रकार की मलीनता से पवित्र कर लेते हैं और अपने ख़ुदा से वफ़ादारी का वचन करते हैं। क्योंकि वे कदापि नष्ट नहीं किए जाएंगे। यह सम्भव नहीं कि ख़ुदा उन्हें अपमानित करे क्योंकि वे ख़ुदा के हैं और ख़ुदा उन का। वे प्रत्येक संकट के समय बचाए जाएंगे। मूर्ख है वह जो उन पर आक्रमण करे क्योंकि वे ख़ुदा की गोद में हैं, और ख़ुदा उनका समर्थक है। कौन ख़ुदा पर ईमान लाया? केवल वही जो ऐसे हैं। इसी प्रकार वह व्यक्ति भी मूर्ख है जो एक दुस्साहसी, पापी, दुश्चरित्र और उपद्रवी की चिन्ता मेंहै। क्योंकि वह स्वयं नष्ट होगा। जब से ख़ुदा ने आकाश और धरती को बनाया, कभी ऐसी घटना नहीं हुई कि उसने पुण्यात्माओं को नष्ट, सर्वनाश और उनका नामोनिशान मिटा दिया हो, अपितु वह उनके लिए बड़े बड़े काम (चमत्कार) दिखलाता रहा है और अब भी दिखलाएगा।

पाप से मुक्ति पाने का उपाय केवल 'यक़ीन-ए-क़ामिल' (सम्पूर्ण विश्वास) है :

हे ख़ुदा को पाने के इच्छुक मानव! कान खोलो और सुनो कि 'यक़ीन' (विश्वास) जैसी कोई चीज़ नहीं। विश्वास ही है जो पाप से मुक्ति दिलाता है। विश्वास है जो सत्कर्म करने की शक्ति देता है। विश्वास ही है जो ख़ुदा का सच्चा प्रेमी बनाता है। क्या तुम पाप को 'विश्वास' के बिना छोड़ सकते हो? क्या तुम शारीरिक आवेगों से 'ईमान' के बिना बच सकते हो? क्या तुम बिना 'विश्वास' के कोई सहानुभूति पा सकते हो? क्या तुम विश्वास के बिना सच्चा परिवर्तन पैदा कर सकते हो? क्या तुम विश्वास के बिना सच्ची ख़ुशहाली प्राप्त कर सकते हो? क्या आसमान के नीचे कोई ऐसा 'कफ़्फ़ारा' या फिदया है जो तुम से पाप छुड़ा सके?

क्या मर्यम का बेटा ईसा ऐसा है कि उस का ख़ून पाप से मुक्ति दिलाएगा? हे ईसाइयो! ऐसा झूठ मत बोलो कि ज़मीन टुकड़े टुकड़े हो जाएं। यीसू स्वयं अपनी मुक्ति के लिए 'विश्वास' (ईमान) पर निर्भर था। उसके विश्वास किया और मुक्ति प्राप्त की। खेद है उन ईसाइयों पर जो मानवजाति को यह कह कर धोखा देते है कि हमने मसीह के ख़ून से पाप से मुक्ति पाई है। वास्तव में वे तो, सिर से पैर तक पापों से ओत प्रोत हैं। वे नहीं जानते कि उन का कौन ख़ुदा है। बल्कि उनका जीवत तो आलस्यपूर्ण है। मदिरा की मस्ती उनके मन में है। परन्तु वह पवित्र प्रेम जो आसमान से उतरता है, उस से वे अपिरचित है। और जो जीवन ख़ुदा के साथ होता है और पवित्र जीवन के परिणाम होते हैं उनसे वंचित हैं। अत: याद रखो कि तुम विश्वास के बिना जीवन के अन्धेरे से बाहर नहीं आ सकते औ न 'रुहूल क़ुदुस' (महान पवित्रता) तुम्हें मिल सकता है। धन्य हैं वे जो विश्वास रखते हैं, क्योंकि वे ही ख़ुदा के देखेंगे। धन्य हैं वे जो शंकाओं से विमुक्त हो चुके हैं, क्योंकि वे ही पाप से मुक्ति पाएंगे। धन्य हो तुम जब तुम्हें विश्वास का धन दिया जाए क्योंकि इसके उपरान्त तुम्हारे पापों का अन्त होगा। पाप और विश्वास दोनों इक्ट्ठे नहीं हो सकते। क्या तुम ऐसे छिद्र में हाथ डाल सकते हो जिस में तुम एक भयंकर विषैले सर्प को देख रहे हो? क्या तुम ऐसे स्थान पर खड़े रह सकते हो जिस स्थान पर ज्वालामुखी से पत्थर बरसते हैं या बिजली गिरती है या एक भयंकर शेर का स्थान हो? या जहां 'प्लेग' मानवजाति को मृत्युशायी कर रही हो? फिरर यदि तुम्हें ख़ुदा पर ऐसा ही विश्वास है जैसा कि सांप पर था बिजली पर या 'प्लेग' पर तो सम्भव नहीं कि इस के (ख़ुदा के) तुम अवज्ञा करके दण्डनीय मार्ग अपना सको या उससे सच्चाई और निष्ठा का सम्बन्ध तोड़ सको।

हे वे लोगो! जो सत्कर्म और सन्मार्ग की ओर बुलाए गए हो। तुम अवश्य समझो कि ख़ुदा का आकर्षण उस समय तुम्हारे अन्दर जागृत होगा, और उसी समय तुम पाप के कलंक से पवित्र किए जाओगे जब तुम्हारे दिल 'विश्वास' से भर जाएंगे। शायद तुम यह कहोगे कि तुम्हें विश्वास प्राप्त है। याद रखो कि तुम भ्रम में पड़े हुए हो। विश्वास कदापि तुम्हारे अन्दर नहीं क्योंकि तुम्हें इसकी अनिवार्यताएं प्राप्त नहीं। कारण यह है कि तुम पाप करने से नहीं रुकते। तुम ऐसा कदम आगे नहीं उठाते जो उठाना चाहिए। तुम इस प्राकर नहीं डरते जैसे डरना चाहिए तुम स्वयं विचार कर लो कि जिसको यह विश्वास है कि उस छिद्र में सांप है, तो वह उस में कब हाथ डालता है? और जिसको विश्वास है कि उसके भोजन में विष है, तो उस भोजन को कब खाता है? और जो वास्तव में देख रहा है कि उस वन में एक हज़ार ख़ूंख़ार शेर हैं तो उसके कदम लापरवाही या सुस्ती में उस वन की ओर कैसे उठ सकते हैं।

अत: तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पैर और तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें पाप करने का साहस किस तरह कर सकती हैं यदि तुम्हें ख़ुदा और जज़ा और सज़ा पर विश्वास है? पाप विश्वसा पर विजयी नहीं हो सकता। और जब तुम भस्म करने और खा जाने वाली अग्नि को देख रहे हो तो कैसे उस अग्नि में स्वयं को डाल सकते हो? विश्वास की दीवारें आसमान तक हैं, शैतान उस पर चढ़ नहीं सकता।

(कश्ती नूह, पुस्तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

❊ ❊ ❊

बच्चों के लिए जनरल नॉलेज

3 से 12 साल की उम्र में बच्चे हर रोज कुछ नया सीख रहे होते हैं, वो दुनिया की नई-नई बातों के बारे में जानने के लिए हर समय उत्सुक रहते हैं. इस उम्र में बच्चों को जनरल नॉलेज की जानकारी देना उनके दिमागी विकास और दुनिया की समझ बढाने के लिए एक अति-आवश्यक कदम है.

जनरल नॉलेज (GK) एक बहुत विस्तृत विषय है. इसमें दैनिक उपयोग की जानकारी से लेकर पशुओ, पक्षियों, ग्रहों, देश, विदेश, संसार, विज्ञान, टेक्नोलॉजी जैसे अनेकों टॉपिक शामिल होते हैं. बच्चों को GK की जानकारी देते समय यह ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है कि वह जानकारी बच्चे की उम्र के अनुसार होनी चाहिए.

बच्चों को जनरल नॉलेज की शिक्षा देना इतना सरल नहीं है, क्योंकि बच्चे कोई भी ऐसी बात नहीं सीखेंगे जो उन्हें बोर करती हो या अच्छी नहीं लगती हो. थ्योरी पढ़ाने की जगह पर अगर हम General Knowledge से जुड़े सवाल-जबाब करेंगे तो वो उस जानकारी को बहुत जल्दी से सीखेंगे और आप से नए-नए सवाल भी पूछेंगे। आप स्वयं भी उनसे इस प्रकार के प्रश्न पूछें।

Q. शरीर के किस अंग से आप देखते हो?A: आँख। Q. सेब किस रंग का होता है? A: लाल Q. चित्र में दिखने वाला जानवर कौन सा है? Ans: टाइगर/ बाघ। Q. एक साल में कितने दिन होते हैं? Ans: 365, 5. दुनिया में कितने महाद्वीप हैं? Ans: सात। 6. भारत की राजधानी क्या है? Ans: देल्ही / दिल्ली। Q. सप्ताह में कितने दिन होते हैं? Ans: सात। Q. शुक्रवार के बाद कौनसा दिन आता है? Ans: शनिवार, Q. इन्द्रधनुष में कितने रंग होते हैं? Ans: सात। Q. इन्द्रधनुष के सभी रंगों के नाम पहचानो Ans: VIBGYOR: (V: Violet – बैंगनी, I: Indigo – गहरा नीला , B: Blue – नीला, G: Green – हरा, Y: Yellow – पीला, O: Orange – नारंगी, R: Red – लाल।

★ ★ ★

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ
بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045

e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ
بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

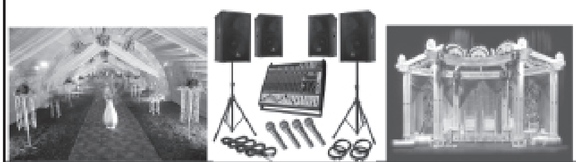

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

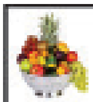

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ
الثَّمَرٰتِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ○ (النحل ۱۱)

Prop : Sk. Ishaque

FFT Fruits

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad

Mobile
09937238938

محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں

RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S

REHAN INTERNATIONAL

WE ARE ON

snapdeal flipkart.com
amazon.com paytm

Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com

We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com

DECO LEATHERS

Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture

Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk
Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road
Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H.O & FACTORY : 20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH :2328-1016

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

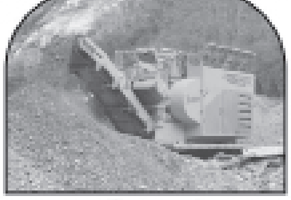

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إن ربك يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ۚ إنه كان بعباده خبيرا بصيرا
(سورہ بنی اسرائیل آیت 31)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical, Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in
Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

128वां जलसा सालाना क़ादियान

दिनांक 29, 30, 31 दिसंबर 2023 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 29, 30, 31 दिसंबर 2023 ई. (शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की स्वीकृति प्रदान की है। अहबाब जमाअत अभी से इस जलसा सालाना में सम्मिलित होने की नीयत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सबको ख़ुदा की खातिर आयोजित किए जा रहे इस जलसे से लाभ उठाने का सामर्थ्य प्रदान करे। इस जलसे की कामयाबी और हर प्रकार से बाबरकत होने के लिए इसी प्रकार सईद रूहों की हिदायत का कारण बनने के लिए दुआएं करते रहें। अल्लाह तआला आपको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मर्कज़िया, क़ादियान)

☆ ☆ ☆